B. Com - III

By. Dr. Manoj Kumar

प्रबन्धकीय लेखाविधि

व्यवसाय प्रबन्ध की समस्याओं के समाधान के लिये लेखाविधि की जिस नवीन शाखा का उदभव हुआ उसे प्रबन्धकीय लेखा विधि के नाम से पुकारा गया। प्रबन्धकीय लेखा-विधि, लेखाविधि से प्राप्त सूचनाओं को विश्लेषित कर व्यवसाय प्रबन्ध के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत करना है ताकि वह व्यवसाय से सम्बन्धित अल्पकालीन व दीर्घकालीन योजनाएं बनाने और विभिन्न प्रकार के निर्णय आसानी से ले सकें।

प्रबन्धकीय लेखा-विधि का आशय –

प्रबन्धकीय + लेखाविधि = प्रबन्धकीय लेखाविधि

प्रबन्धकीय शब्द का आशय प्रबन्ध की दृष्टि से होता है जबकि लेखाविधि का आशय व्यवसाय से सम्बन्धित वित्तीय व्यवहारों को लिपिबद्ध करना, उनका सम्पादन और प्रस्तुतीकरण करना है। इस प्रकार प्रबन्धकीय लेखाविधि से आशय उस तकनीकी से है जिसमे लेखाविधि की सूचनायें प्रबन्ध के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत की जाये ताकि वह उनके आधार पर निर्णय ले सके।

प्रबन्धकीय लेखाविधि को प्रबन्धकीय लेखांकन (Management Accounting) प्रबन्ध हेतु लेखांकन (Accounting for Management) प्रबन्धकीय निर्णयों हेतु लेखांकन (Accounting for Management Decisions) आदि नामो से भी ......

प्रबन्धकीय लेखाविधि की तकनीके अथवा औजार
(Tools or Techniques of Management Accounting)

प्रबन्धकीय लेखाविधि द्वारा अनेक प्रकार के कार्य किये जाते है जिसके लिये अनेक विधियो, रीतियो तथा तकनीको का प्रयोग किया जाता है, इन्हे प्रबन्धकीय लेखा-विधि के औजार (Tools) कहा जाता है। इस क्षेत्र मे नित्य नई तकनीक का आरम्भ होता है। इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार की विधियाँ प्रयोग मे लाई जाती है जिनमे से कुछ पुरानी है तथा कुछ आधुनिक।

(A) वित्तीय सूचनाओ पर आधारित औजार —
(Tools Based on Financial information)

- (I) अनुपात विश्लेषण Ratio Analysis
- (II) तुलनात्मक विवरण Comparative Statements
- (III) प्रवृति विश्लेषण Trend Analysis
- (IV) कोष प्रवाह विवरण Fund flow Statement
- (V) रोकड़ प्रवाह विवरण Cash flow Statement

(B) लागत सूचनाओ पर आधारित औजार —
(Tools Based on Costing Information)

1. लागत मात्रा-लाभ विश्लेषण (Cost-Volume-Profit Analysis)
2. सीमान्त लागत विधि (Marginal cost Technique)
3. प्रमाप लागत विधि Standard Costing

(C) गणित एवं सांख्यिकी पर आधारित औजार
(Tools Based on Mathematics and Statistics)

1. क्रियात्मक अनुसन्धान (Operation Research)
2. रेखीय कार्यक्रम (Linear Programming)
3. नेटवर्क विश्लेषण (Network Analysis)

Scanned with CamScanner

(D) भावी अनुमानों पर आधारित औजार
(Tools Based on Future Estimates)

1. व्यावसायिक पूर्वानुमान (Business Forecasting)
2. बजट तथा बजटिंग (Budget and Budgeting)
3. बजटरी नियंत्रण (Budgetary Control)
4. परियोजना मूल्यांकन (Project Appraisal)

(E.) अन्य औजार (Other Tools) —

(I) प्रबन्धकीय प्रतिवेदन (Managerial Reporting)

(II) एकीकृत अंकेक्षण (Integrated Auditing)

Scanned with CamScanner

उपरोक्त में से प्रमुख तकनीकें आगामी अध्यायों में विस्तार के साथ समझायी गई हैं।

प्रबन्धकीय लेखा-विधि तथा वित्तीय लेखाँकन में अन्तर

(Difference between Management Accounting and Financial Accounting)

व्यवसाय के दिन-प्रतिदिन के व्यवहारों का लेखा करना, उन्हें वर्गीकृत करना तथा लेखा-अवधि का लाभ अथवा हानि स्पष्ट करना एवं व्यापार की वित्तीय स्थिति हेतु आर्थिक चिट्ठा तैयार करना वित्तीय लेखों

Scanned with CamScanner

का कार्य है जबकि वित्तीय लेखों से प्राप्त सूचनाओं से विवरण तैयार करना, उनका विश्लेषण तथा निर्वचन करना प्रबन्धकीय लेखाँकन का कार्य है। इस प्रकार वित्तीय लेखाँकन जहाँ समाप्त होता है वहाँ से प्रबन्धकीय लेखाँकन प्रारम्भ होता है। प्रबन्धकीय लेखाँकन में भावी अनुमान भी शामिल किये जाते हैं। वित्तीय लेखाँकन तथा प्रबन्धकीय लेखाँकन में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	अन्तर का आधार	वित्तीय लेखाँकन	प्रबन्धकीय लेखा-विधि
1.	प्रकृति	इसमें व्यवसाय के उन व्यवहारों का लेखा किया जाता है, जो वास्तव में हो चुके हों।	इसमें वास्तविक लेखों का भविष्य के निर्णय लेने में उपयोग होता है।
2.	उद्देश्य	व्यवसाय के लेन-देनों का लेखा करना, वर्ष का लाभ-हानि ज्ञात करना तथा चिट्ठा तैयार करना इसका उद्देश्य है।	इसका उद्देश्य प्रबन्ध को निर्णय लेने हेतु आवश्यक सूचनायें, रिपोर्ट, विश्लेषण तथा निर्वचन उपलब्ध कराना है।
3.	विषय सामग्री	सम्पूर्ण व्यवसाय के विस्तृत तथ्य होते हैं। इसमें सम्पूर्ण व्यवसाय का परिणाम देखा जाता है।	इसमें व्यवसाय की विभिन्न इकाइयों, विभागों तथा लागत केन्द्रों का अलग-अलग परिणाम देखा जाता है।
4.	अनिवार्यता	वित्तीय लेखे सभी व्यवसायों के लिये आवश्यक तथा कुछ के लिये अनिवार्य होते हैं।	प्रबन्धकीय लेखाँकन आवश्यक तो नहीं है अपितु प्रबन्ध के लिये उपयोगी उपकरण हैं।
5.	उपयोग	वित्तीय लेखे, स्वामियों, अंशधारियों, बैंकों, ऋणदाताओं, सरकार आदि के लिये उपयोगी होते हैं।	प्रबन्धकीय लेखे प्रबन्ध के कार्यों को कुशलतापूर्वक करने के लिये उपयोगी होते हैं।
6.	लेखाँकन सिद्धान्त	वित्तीय लेखाँकन में लेखाँकन के सामान्य सिद्धान्तों का पालन किया जाता है।	प्रबन्धकी लेखा-विधि में नियमों तथा सिद्धान्तों का पालन आवश्यक नहीं होता।
7.	व्यवहार	इसमें केवल मौद्रिक व्यवहारों का लेखा होता है।	इसमें मौद्रिक तथा अमौद्रिक सभी तथ्यों पर विचार किया जाता है।
8.	प्रकाशन	लाभ-हानि विवरण तथा चिट्ठा कम्पनी द्वारा सामान्य जनता की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाता है।	ये लेखे केवल प्रबन्ध के प्रयोग हेतु तैयार होते हैं अतः इनका प्रकाशन नहीं होता।
9.	अंकेक्षण	इनका अंकेक्षण भी कराया जा सकता है। कम्पनी के लेखों का अंकेक्षण अनिवार्य होता है।	इनका अंकेक्षण नहीं कराया जा सकता क्योंकि यह वास्तविक आँकड़ों पर आधारित नहीं होते।
10.	अवधि	वित्तीय लेखे सामान्यतः एक वर्ष के लिये तैयार होते हैं।	प्रबन्धकीय विवरण बार-बार थोड़े समय के अन्तर पर तैयार होते हैं और कुछ अनुमान अगले कई वर्षों के लिए होते हैं।
11.	शुद्धता	इनका पूर्ण शुद्ध होना आवश्यक होता है।	इसमें पूर्ण शुद्धता आवश्यक नहीं होती। कभी-कभी अनुमानित अंक होते है।
12.	क्षेत्र	इसमें केवल व्यवसाय के वास्तविक व्यवहारों का लेखा होता है।	इसमें वित्तीय लेखे, लागत लेखे, वित्तीय नियोजन, समंकों का विश्लेषण व निर्वचन शामिल होता है।
13.	कार्य पद्धति	इसमें लेखे आय-व्यय, सम्पत्ति, व्यक्ति आदि के आधार पर रखे जाते हैं।	इसमें लेखे लागत आगम, उत्तरदायित्व, केन्द्र, लाभ केन्द्र, आदि के आधार पर रखे जाते हैं।
14.	संवहन	वित्तीय लेखों की सूचनायें सम्बन्धित पक्षों को देने में शीघ्रता नहीं दिखाई जाती।	प्रबन्ध को सम्बन्धित सूचनाएं अतिशीघ्र पहुँचाना आवश्यक होता है।
15.	लागतें	इसमें केवल वास्तविक लागतें ही शामिल की जाती हैं।	इसमें काल्पनिक लागतें भी शामिल करते हैं जैसे पूँजी पर ब्याज, अपने भवन का किराया आदि।

Scanned with CamScanner

प्रबन्धकीय लेखा-विधि तथा लागत लेखांकन में अन्तर
(Difference between Management Accounting and Cost Accounting)

जिन व्यवसायों में निर्माण कार्य अथवा सेवा पूर्ति का कार्य होता है वहाँ निर्मित वस्तु अथवा सेवा की लागत ज्ञात करने के लिये लागत लेखे रखे जाते हैं। लागत लेखाँकन लागतों के वर्गीकरण, विभाजन तथा विश्लेषण की एक ऐसी लेखा प्रणाली है जिसके द्वारा उत्पादित वस्तु तथा सेवा की कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत ज्ञात होती है। इसके विपरीत प्रबन्धकीय लेखाँकन के अन्तर्गत वित्तीय तथा लागत लेखों से सम्बन्धित सूचनाओं को प्रबन्ध के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि प्रबन्ध को निर्णय लेने में सहायक हो। इस प्रकार प्रबन्ध लेखाँकन में वित्तीय लेखाँकन, लागत लेखाँकन, वित्तीय प्रबन्ध आदि सभी सम्मिलित होते हैं। प्रबन्धकीय लेखाँकन तथा लागत लेखाँकन में कुछ समानतायें हैं तो कुछ असमानतायें भी हैं, जो इस प्रकार है-

समानतायें (Similarities)—लागत लेखाँकन तथा प्रबन्धकीय लेखाँकन में निम्न समानतायें हैं-

1. आन्तरिक प्रबन्ध में उपयोग (Use in Internal Management)—दोनों लेखों का उपयोग संस्था के आन्तरिक प्रयोग में होता है। वैधानिक दृष्टि से दोनों प्रकार के लेखे रखना आवश्यक नहीं है। ये ऐच्छिक प्रकृति के लेखे हैं।

2. भूतकालीन तथ्य तथा भावी अनुमान (Past Records and Future Estimates)—लागत लेखाँकन तथा प्रबन्धकीय लेखाँकन दोनों में पिछले लेखों से सूचनायें ली जाती हैं तथा आवश्यक भावी अनुमान लगाये जाते हैं। इस प्रकार दोनों लेखों में वित्तीय लेखों से सूचनायें ली जाती हैं तथा भावी परिवर्तन पर विचार किया जाता है।

3. प्रावैगिक पद्धति (Dynamic Nature)—लागत लेखों तथा प्रबन्धकीय लेखों दोनों के अन्दर लेखा रखने की निश्चित पद्धति नहीं है। आवश्यकतानुसार लेखों को नया रूप दिया जा सकता है।

असमानतायें (Dissimilarities)—लागत लेखाँकन तथा प्रबन्धकीय लेखाँकन में निम्नलिखित प्रमुख अन्तर हैं-

1. प्रकृति (Nature)—लागत लेखाँकन में भूतकालीन तथ्य तथा भावी अनुमान दोनों को शामिल किया जा सकता है जबकि प्रबन्ध लेखाँकन में भावी अनुमानों के लिये ही भूतकालीन तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है।

2. विकास (Evolution)—लागत लेखाँकन का विकास एक शताब्दी पूर्व हुआ था जब औद्योगिक क्रान्ति आई तब उद्योगों में यंत्रों का प्रयोग बड़ी मात्रा में होने लगा इसके विपरीत प्रबन्धकीय लेखाँकन प्रबन्धकीय क्रान्ति की देन है जिसका विकास विगत छः दशकों से ही हुआ है।

3. उद्देश्य (Objects)—लागत लेखाँकन का उद्देश्य वस्तु तथा सेवा की प्रति इकाई लागत ज्ञात करना होता है जबकि प्रबन्धकीय लेखाँकन का उद्देश्य व्यावसायिक क्रियाओं का नियोजन, नियंत्रण तथा निर्णयन है।

4. क्षेत्र (Scope)— लागत लेखाँकन का क्षेत्र सीमित होता है। इसमें लागत सम्बन्धी समंकों का वर्गीकरण, तथा विश्लेषण करके उत्पादन की कुल लागत, प्रति इकाई लागत तथा प्रति इकाई लागत में लागत के प्रत्येक तत्व का भाग निर्धारित किया जाता है। प्रबन्धकीय लेखाँकन का क्षेत्र काफी व्यापक है। इसमें वित्तीय लेखाँकन, लागत लेखाँकन, बजटिंग, कर नियोजन, प्रबन्ध को रिपोर्ट देना, समंकों का विश्लेषण तथा निर्वचन सम्मिलित किया जाता है।

5. लेखा प्रारूप एवं सिद्धान्त (Accounting Format and Principles)—लागत लेखों के प्रारूप बहुत कुछ निश्चित होते हैं तथा इसके निर्धारित नियम होते हैं जिनके आधार पर लेखे रखे जाते हैं। किन्तु प्रबन्धकीय लेखाँकन के न तो कोई निश्चित प्रारूप ही होते हैं और न ही कोई नियम होते हैं। इसके विवरण विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न प्रकार से तैयार किये जाते हैं तथा रिपोर्टों का भी कोई प्रारूप निश्चित नहीं होता है।

6. समंकों की प्रकृति (Nature of Data)— लागत लेखाँकन में केवल मौद्रिक समंक ही प्रयोग किये जाते हैं क्योंकि उत्पादित वस्तु तथा सेवा की लागत में जो व्यय होते हैं वे सभी मुद्रा में ही होते हैं। इस प्रकार लागत लेखाँकन में प्रयुक्त सभी समंक मुद्रा में ही व्यक्त होते हैं इसके विपरीत प्रबन्धकीय लेखाँकन में मौद्रिक तथा अमौद्रिक दोनों प्रकार के समंकों का प्रयोग किया जाता है। इन समंकों में संख्यात्मक समंक तथा गुणात्मक तथ्य भी सम्मिलित होते हैं।

Scanned with CamScanner

7. समंकों का विश्लेषण एवं निर्वचन (Analysis and Interpretation of Data)—लागत लेखांकन के समंकों का उपयोग लागत ज्ञात करने के लिये किया जाता है उनका विश्लेषण एवं निर्वचन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इसके विपरीत प्रबन्धकीय लेखांकन में एकत्र किये गये समंकों का विश्लेषण करके उनसे क्या निष्कर्ष निकलता है इसे भी प्रबन्ध को उपलब्ध कराया जाता है।

8. अंकेक्षण (Audit)—कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 233 (B) के अनुसार कुछ विशेष उत्पाद कम्पनियों को अपने लागत खातों का अंकेक्षण कराना अनिवार्य है जबकि प्रबन्धकीय लेखांकन में अंकेक्षण की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि लागत लेखांकन का प्रयोग प्रबन्धकीय लेखांकन में होता है। इसके अतिरिक्त प्रबन्धकीय लेखांकन में अन्य अनेक बातों को भी शामिल किया जाता है।

Scanned with CamScanner